

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक 22 - 03 - 2016

गुरु वंदना केन्द्र "मिनी माता भवन कोहका - भिलाई" में पंचम गुरु वंदना के अवसर पर  
**समाज में शिक्षा की दशा और दिशा - विषय पर "परिचर्चा कार्यक्रम"** संपन्न  
PARICHARCHA PROGRAMME HELD

गुरु वंदना केन्द्र "मिनी माता भवन कोहका - भिलाई" गुरु वंदना के अवसर पर एक विशेष "**परिचर्चा कार्यक्रम**" जारी है। इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने अनुभूति व अनुभव कमबद्ध गुरु वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं। "**परिचर्चा कार्यक्रम**" में

दिनांक 21 मार्च (दिन सोमवार) 2016 को शाम 6.30 बजे गुरु वंदना केन्द्र "मिनी माता भवन कोहका - भिलाई" में पंचम गुरु वंदना के अवसर पर श्री हीरामन दास कुर्रे, कु दीक्षा खेवार, श्री आकाश बंजारे, कु मनीषा बंजारे, , कु पायल बघेल, , रोशन सिरमौर, अतुल बांधे, चंद्रेश कुमार देशलहरा, आदि ने "**समाज में शिक्षा की दशा और दिशा**" विषय पर आयोजित "परिचर्चा कार्यक्रम" में अपने अपने विचार व अनुभव प्रदान किये। सबने महसूस किये : जिस समाज में शिक्षा का अभाव होता है या जो समाज शिक्षा के प्रति



उदासीन होता है, वह समाज धीरे धीरे गुलामी की तरफ अग्रसर होता है। भारत देश में सदियों से वंचित समाज गुलामी व लाचारी का बोझ झेल चुका है। सन् 1825 में पहली बार शिक्षा सेक्यूलर हुआ और शिक्षा से वंचितों को भी शिक्षित होने का अवसर मिल पाया। महात्मा ज्योतिबा फूले ने सर्व प्रथम पढ़ लिख कर तथा अपनी पत्नी को भी शिक्षित कर सदियों से शिक्षा से वंचितों के लिये सन् 1848 में पाठशाला खोल कर शिक्षा देना शुरू किये। भारतीय संविधान के लागू होने से शिक्षा का अधिकार देश के समस्त नागरिकों के लिये मौलिक अधिकार बन गया। वर्तमान में शिक्षा बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है। विश्वीकरण का असर, प्रिंट व इलेक्ट्रानिक्स मिडिया के अनेक रूप उपलब्ध हैं। सीखने व सिखाने का प्रक्रिया भी तेजी से बढ़ रही। इन सबके बावजूद शिक्षा के साथ सकारात्मक संस्कार व संस्कृति का अभाव सर्वत्र देखा जा रहा है। शिक्षण संस्थाओं, झुग्गी झोपड़ी से आलीशान बंगलों तक, गांव से शहरों तक अनैतिक, अनाचार, अत्याचार के समाचारों से समस्त प्रकार के मिडिया के माध्यम से देखने, सुनने व पढ़ने का आदी भारत देश की जनता बन चुकी है। इन हालातों में शिक्षा के साथ दीक्षा, जो मानवीय आधारित हो, अति आवश्यक जान पड़ता है। मानव समाज के चिंतकों, स्वयम् सेवी संगठनाओं की विशेष दायित्व बन जाता है कि : नियमित व संयमित शिक्षा के साथ मानवतावादी संस्कार व संस्कृति का सुजन व संचालन करें।

गुरु प्रसाद कु दीक्षा खेवार के परिवार की ओर से था। इस अवसर पर विवेक खेवार, दिशा खेवार, आकांक्षा खेवार, प्रिया बंजारे, सोम देशलहरे, स्नेहा मजूमदार, हिमांशू गेण्डे, मुस्कान कुर्रे, विवेक बघेल कुनाल मारकण्डे

,जावेद टंडन ,गप्पू बंजारे ,पंकज बंजारे ,राम बाई खेवार ,धरमइतीन कुरे ,टी आर टंडन ,सनत कुमार डाहरे ,एफ आर जनार्दन आदि बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे ।

इसी कडी में अगले 28 मार्च ( दिन सोमवार) 2016 को शाम 6.30 बजे गुरु वंदना केन्द्र मिनी माता भवन कोहका भिलाई में छठवीं गुरु वंदना के अवसर पर "गुरु बालकदास जी की कुर्बानी से समाज को सबक लेने की जरूरत है " विषय पर अगला "परिचर्चा कार्यक्रम " आयोजित है । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें ।

( देवलाल सरसुधे )  
गुरु वंदना केन्द्र प्रभारी

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक- 17 03 2016

मिनीमाता जी की 103 वीं जयंती के अवसर पर  
महिला दिवस एवं "सतनामी समाज की रीति रिवाज " विषय पर

## परिचर्चा संपन्न

सतनामी महिला जागृति समिति भिलाई नगर पंजियन ,कमांक 19797 के तत्वावधान में मिनीमाता जयंती की 103 वीं जयंती के अवसर पर महिला दिवस एवं "सतनामी समाज की रीति रिवाज " विषय पर परिचर्चा, दिनांक 13 मार्च 2016 को सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में इस्पात नगरी भिलाई नगर के बुद्धिजीवी समाज के प्रत्येक वर्ग की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री एफ आर जनार्दन उप महा प्रबंधक (सेवा निवृत्त) भिलाई इस्पात संयंत्र थे



। अध्यक्षता श्री मती विमला जनार्दन पूर्व अध्यक्ष सतनामी महिला जागृति समिति भिलाई नगर एवं वरिष्ठ सलाहकार , तथा विशेष अतिथियों में श्री गेंद लाल राय अध्यक्ष गुरु घासीदास सेवा समिति भिलाई नगर ,श्री शांति लाल मिर्चे



विकासखण्ड शिक्षाधिकारी ,डॉ केशव देशलहरा प्राचार्य घुमका महाविद्यालय ,श्रीमती किरण चंदवानी उपाध्यक्ष गुरु घासीदास सेवा समिति भिलाई नगर,श्री मती संध्या ढीढ़ी बाल विकास अधिकारी राजनांदगांव कु रेनुका रात्रे नायब तहसीलदार डोंगरगढ़ ,श्री मती ज्योति प्रकाश स्वामी एसडीओ-सी एस ई बी भिलाई 3 थे । अतिथियों द्वारा बाबा गुरु घासीदास व स्व मिनीमाता के तेल चित्र के सामने दीप प्रज्वलित व माल्यार्पण के पश्चात सामूहिक गुरु वंदना के साथ कार्यक्रम की शरूवात हुयी । अतिथियों का स्वागत समिति के सदस्यों द्वारा बुके प्रदान कर किया गया

। महिला भजन मंडली ने बाबा जी के उपदेश व मिनीमाता के योगदान संबंधित भजन प्रस्तुत किये । श्री मती सुधादेशलहरे समिति के महासचिव द्वारा स्वागत भाषण प्रदान की गई ।

"सतनामी समाज की रीति रिवाज" विषय पर आयोजित परिचर्चा में विशेष अतिथियों ने परिवार , समाज व राष्ट्र के उन्नति में महिलाओं की भागीदारी की प्रशंसा किये । महिलाओं के विशेष अधिकार ,राज्य व केन्द्र सरकार की योजनाओं की भी विस्तृत चर्चा किये । साथ ही सलाह दिये कि महिलाओं को पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिला कर चलने में गर्व महसूस करना चाहिये । बेटा व बेटी में समानता बरतें । हम विशेष ध्यान दें कि ग्रामीण अंचलों में कहीं हमारी बेटियाँ पीछे न रह जायें । समाज में रीति रिवाज के सृजन व संचालन में विशेष योगदान महिलाओं की भूमिका सर्वोपरी होता है । मुख्य अतिथि श्री एफ आर जनार्दन ने बताया कि भारत देश में समस्या का मूल जड़ देश में सदियों से प्रचलित जातिवादी सामाजिक व्यवस्था ही है । अनेक मानवतावादी संतों व महात्माओं ने अपने अपने



सामर्थ्य के अनुरूप जातिवाद का समाप्त कर एक आदमी एक मूल्य लाने की कोशिश किये हैं । इस समस्या का स्थायी हल अपनी आदत व्यवहार , रहन सहन , खान पान , रीति रिवाज, संस्कार आदि में मानवता के अनुरूप परिवर्तन कर के ही हो सकता है । महिला समिति द्वारा इन विषयों पर परिचर्चा होना , समाज के महिलाओं की जागृति की निशानी है । निश्चित ही समाज में बदलाव के लिये टर्निंग पाइन्ट सिद्ध हो रहा है । पूर्व में सतनामी समाज में गुरु घासीदास जी व इनके सुपुत्र राज गुरु बालकदास जी के प्रयास से अठगवा प्रथा , राजमहंत , महंत व गाँव गाँव में छड़ीदार व भंडारी के माध्यम से समाज अनुशासित व्यवस्थित रहा है । गुरु घासीदास जी की सन् 1820 से सन् 1830 तक बौद्धिक क्रान्ति का विशेष असर रहा । अंग्रेजों द्वारा सन् 1825 में शिक्षा सेक्यूलर का कानून बनाना ,बौद्धिक क्रान्ति का ही असर है । साथ ही सन् 1829 में गुरु बालक दास जी को अंग्रेजों द्वारा साने के मुठ जड़ित तलवार व हाथी भेंट कर राजा गुरु की पदवी से नवाजा जाना ,सतनामी समाज के लिये महान गौरव की विषय है । 28 मार्च 1860 में औराबांधा में गुरु बालकदास जी का षडयंत्र पूर्वक निर्मम हत्या होने से सतनाम मिशन को गहरा आघात पहुँचा । तत्कालीन अंग्रेज शासन कर्नल इग्नू को कहना पड़ा : "अगर गुरु बालदास जी



दस साल और जिंदा होते तो पूरा छत्तीसगढ़ सतनाममय हो गया होता " । अमानवीय षडयंत्र कारियों को सतनामी समाज में विखराव करने का मौका मिल गया । सन् 1905 के आसपास रामनामी व सूर्यवंशी का अलग से अस्तित्व में आना सतनामी समाज के विखराव को प्रदर्शित करता है । सतनामी समाज को अपमानित करने का भी प्रयास किया गया ,जिसे रतिराम गैटिया ने सन् 1926 में बचाया । सतनाम मिशन का पुर्नउत्थान मंत्री नकुल देव ढीढ़ी जी ने सन् 1938 में अपने गृह गांव से भोरिंग से गुरु घासीदास जी

की जयंती शुरुवात कर तथा गिरौदपुरी के एक दिवसीय मेला को सन् 1961 में तीन दिवसीय (फागुन शुक्ल पंचमी , षष्ठी व सप्तमी )कर समाज में केन्द्र बिन्दु सृजन व संचालन की शुरुवात कर दिये । आज समाज की ताकत नजर आती है । गिरौदपुरी में कुतुंबमीनार से ऊंची जैतखाम का निर्माण इसका पुख्ता सबूत है । छत्तीसगढ़ में सैकड़ों की तादाद में सतनाम भवन व सतनाम धाम स्थित हैं, जिन्हें केन्द्र बिन्दु बना कर साप्ताहिक कार्यक्रम चला कर समाज की ताकत को कई गुना बढ़ाया जा सकता है । जिस तरह भारतीय संविधान देश का सर्वोच्च कानून है , ठीक उसी प्रकार गुरु घासीदास जी के उपदेश व अमरवाणियों सतनामी समाज के लिये रीति रिवाज सृजन व

संचालन का आधार बन सकता है । समाज के मुखिया जनों को गुरु घासीदास जी के उपदेश व अमरवाणियों को अंगीकृत करने से समाज समाज में रीति रिवाज में एकरूपता व अनुशासित समाज का निर्माण होगा । कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रही श्री मती विमला जनार्दन ने समाज में महिलाओं के द्वारा किये जा रहे प्रयासों की के लिये प्रसन्नता जाहिर किये । जो रीति रिवाज समाज के हित के अनुरूप नहीं हैं , उनका त्याग बहुत जरूरी है । जन्म से मृत्यु तक अनेक संस्कार व कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं । अनावश्यक रूप से खर्च किये जाते हैं, जिसे रोकना जरूरी है । दाह संस्कार में कपड़ों की बर्बादी आज आम बात हो गई है । इस आस्था के स्वरूप को बदलना होगा । विधवा महिला के मान सम्मान के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । ऐसा कोई रीति रिवाज को पाल कर न रखें जिससे विधवा महिला का अपमान होता है । समिति के सदस्यों जिनका वैवाहिक जीवन पचास साल पूर्ण कर लिये हैं , उन्हें सम्मानित करने का विशेष कार्यक्रम आयोजित था । इसके तहत दो दंपतियों : श्री मोहन लाल भतरिया -श्री मती जमुना भतरिया व श्री अशोक कुमार बारले -श्री मती सुभद्रा बारले दंपतियों का दुल्हा व दुल्हन परिधान प्रदान कर बर माला कार्यक्रम आयोजित हुआ । दोनों दम्पति ने बड़ी ही भावुक हृदय से महिला समिति का आभार माना । समाज के दो प्रतिभाओं : कु रिया चंद्रवंशी व मि तरुण घृतलहरे को क्रमशः तलवारबाजी व कराटे में विशेष योग्यता के लिये सम्मानित किया गया । पकवान प्रतियोगिता का भी आयोजन



किया गया था, जिसमें प्रथम -श्री मती सरस्वती कोशले ,द्वितीय श्री मती सतरूपा चंद्रवंशी, तृतीय श्री मती मीना पटेल तथा सान्तवना पुरष्कार श्री मती सुकवारो बंजारे , श्री मती माहेश्वरी पाटले , श्री मती उमा जांगड़े व श्री मती लक्ष्मी कोसरे को मिला । इस मौके पर जयंती के उपलक्ष में अतिथियों द्वारा केक काटा गया । सभी अतिथियों को पतीक चिन्ह , श्री फल व साल से सम्मानित किया गया । कार्यक्रम का सफल संचालन समिति के अध्यक्ष श्री मती

पार्वती ढीढ़ी ने किया तथा आभार प्रदर्शन समिति के सचिव श्री मती सुशीला बंजार ने किया । कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के पदाधिकारियों, सलाहकार व सदस्यों का विशेष योगदान रहा । गुरु घासीदास समिति का भी भरपूर सहयोग रहा ।

**श्री मती पार्वती ढीढ़ी**

**अध्यक्षा**

सतनामी महिला जागृति समिति भिलाई नगर पंजियन ,कमांक 19797

XX

हैदराबाद से चिंगारी उठी है अब पुर देश में शोले भी भड़केंगे

Feb 03 2016 : The Times of India (Delhi)

Wanted: Ambedkar 2.0

Sagarika Ghose

**The Dalit leadership has failed young Ambedkarites like Rohith Vemula**

The politically correct felicitations of B R Ambedkar on his 125th birth anniversary were rendered somewhat meaningless by the suicide of Hyderabad Central University student Rohith Vemula. Netas descended in quick succession on HCU. From Rahul Gandhi to Chirag Paswan, Mayawati to Arvind Kejriwal, there were familiar expressions of sympathy but little evidence of just how the political class intends to address the core issue of realizing the Ambedkarite vision for 21st century India. Particularly heartless were the utterances of Union ministers who questioned Rohith's caste without an ounce of empathy, even as they've been busily trying to appropriate Ambedkar.

When Ambedkar is only a political token, how can his modern progressive vision ever be realized? By challenging Rohith's caste status, BJP might save its minister Bandaru Dattatreya from the SCST Act but it hardly provides for a political reach-out to those who now see Rohit as a symbol of a brutally unequal order. Nor can this be Rahul Gandhi's Belchi moment: having treated its Dalit leaders as marginal representatives for decades, it will require more than a one night vigil to convince Dalit groups that Congress is willing to share power.

The Paswans and Mayawatis may have benefitted from their caste status, but their politics has revolved around self-aggrandizement, hardly the radical change in the power structure that Ambedkar envisioned, nor the idea that political power was to be sought for the larger goal of social equality. Perhaps reservation in constituencies plays a part here; forever imprisoned in the reserved trap, a competitive Dalit leadership of intellect and stature has not emerged.

Ambedkar believed a political democracy that does not work towards an egalitarian society was meaningless. In Annihilation of Caste, he provided a trenchant critique of “enlightened high caste reformers who did not have the courage to agitate against caste“. For Ambedkar, upper caste leadership of Dalits was abhorrent, he rejected both Hinduism and the caste system as well as the claims of any upper castes to represent Dalits.

But his legates in the post-Independence era, from Paswan to Mayawati to Ramdas Athavale, have rushed to form alliances with **different mainstream upper caste political parties**, enamored as they are of political power for its own sake. Ambedkar's urgent mission of creating a Dalit counter-narrative to caste, to Hinduism and to the dominant forms of Indian culture, to mount a full scale socioeconomic transformation of Indian society , has been forgotten by those who act in his name.

The fiery Athavale and his Republican Party of India have sought favors from whoever has been in power. Ram Vilas Paswan holds the distinction of being in virtually every cabinet since the United Front government of the mid-1990s. For a while it looked as if Kanshi Ram and Mayawati would break out of the deadening cycle of mainstream politics particularly in their BAMCEF years. A BAMCEF bulletin declared in 1976: “Educated persons from oppressed communities are trapped in government services ... their cowardice, selfishness, inherent timidity and lack of desire of social service to their own creed ... makes them useless.“ But BAMCEF failed at an intellectual awakening. Kanshi Ram set up BSP in 1984 and Mayawati unleashed a political revolution in U P on the ground prepared by Kanshi Ram.

Yet BSP not only created its own power elite bank but today has become almost unrecognizable from any other political party , particularly after Mayawati declared her mission was Sarvajan Samaj a big setback for the social mission of Kanshi Ram. While this made political sense, ideologically the Ambedkarite mission was somewhat betrayed. Educated Dalits may have formed entrepreneurs' groups and pressed for change in the private sector. But in the public realm, the Dalits today lack their version of an Asaduddin Owaisi. Love him or hate him, Owaisi is emerging as the political voice of the Indian Muslim, by offering a robust and reasoned counter narrative (unlike his more outrageous brother) on debates ranging from terrorism to the Uniform Civil Code. Where is a similarly argumentative Dalit leader offering a genuine alternative template?

As the scholar Kancha Ilaiah writes: “The tragedy is every young Dalit intellectual's ambition is to be a civil servant ... an administrative slave of Hindu Brahmanism ...the Dalit community has not produced a powerful socio-spiritual philosopher.”

In Homo Hierarchicus, Louis Dumont argued that the caste system is a system of ideas in which the Dalit by his very existence violates the brahmanical obsession with personal hygiene and purity. While the menstruating woman or the bereaved can escape their pollution, the Dalit is “unclean“ from birth. Reservations have created a Dalit middle class, but what about the mission to smash the “purity“ versus “pollution“ system of ideas altogether? When Ambedkar burnt the Manusmriti, launched a movement to drink water from tanks, he took his place with Jyotirao Phule and E V Ramaswami Naicker who had not just anti-Brahmin, but anti-caste and anti-birth based social hierarchy in their overarching agenda of action.



Where is such a Dalit leader today?

Rewriting the Purusa Sukta, a hymn that places castes in a hierarchy of the Divine's Being's body parts, was a demand once voiced by Dalit intellectuals as a crucial first step in a spiritual renaissance of Hinduism; they believed this would make Hinduism more modern and egalitarian. But there is no Dalit political leader after KanshiRam who is able to frontally challenge the idea of Dalitness in caste Hindu minds. The Dalit Panthers of the 70s have faded away, their radical poetry either co-opted or forgotten. Youth like Rohith Vemula search for answers, try in vain to make sense of the discrimination they face, yet the modern Dalit leadership continues to fail them.

**Perhaps reservation in constituencies plays a part here; forever imprisoned in the reserved trap, a competitive Dalit leadership of intellect and stature has not emerged**



## Call for leadership is the demand of the Day

### ज्ञापन

प्रति

दिनांक २६ जनवरी २०१६

- १ महामहीम राष्ट्रपति महोदय  
राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली -१
- २ महामहीम राज्यपाल महोदय

उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ

द्वारा: जिलाध्यक्ष महोदय जिला गौतम बुद्ध नगर (उ प्र )

विषय : हैदराबाद वि. वि. में रोहित बेमुला के राजनीतिक षड्यंत्र के तहत हुई हत्या के संबंध में जापन महोदय,

आज पूरा देश गणतन्त्र दिवस के समारोह से सराबोर है प्रजातंत्र के 65 साल बीत चुके हैं लेकिन रंग वर्ण जाति व धर्म भेद समाज में यथावत व्याप्त है कुछ सालो से साम्प्रदायिकता सिर चढ़ के नाच रही है जिसका शिकार हैदराबाद विश्व विद्यालय के अम्बेडकर विद्यार्थी सन्गठन व उसके के प्रमुख होनहार छात्र रोहित बेमुला की हत्या साम्प्रदायिक ताकतों के हाथो राजनीतिक सत्ता के दुरुपयोग व षड्यंत्र के तहत हुई है जिसका स्पष्ट प्रमाण

१ आर एस एस संचालित ए बी वी पी जैसे साम्प्रदायिक ताकतों के इशारे पर केन्द्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय के पत्र व मानव संसाधन मंत्री स्मृति ईरानी द्वारा लगातार राजनीतिक दबाव में अम्बेडकर विद्यार्थी सन्गठन के पाच छात्रो का निष्कासन व केम्पस में प्रवेश से प्रतिबन्ध.

२ रोहित बेमुला का शव विश्व विद्यालय केम्पस के प्रतिबंधित क्षेत्र में पाया जाना जहा रोहित को घुसने की अनुमति नहीं थी.

३ रोहित का लिखा हुआ प्रपत्र के शब्द उसके विचारधारा से मेल नहीं खाता.

४ यह घटना सांप्रदायिक ताकतों जो देश की सामाजिक सौहार्द्र को लगातार बिगाड़ने में लगे हैं, के इशारे पर ब्यक्ति के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का स्पष्ट हनन है यह प्रजातंत्र की अप्रत्यक्ष हत्या है.

अतः हम नोएडा वासी इस संस्था के माध्यम से आपको जापन भेजा जा रहा है कि इस असाधारन घटना को राष्ट्र हित में तत्काल कार्यवाही कर अनुग्रहित करे. हमारी मागे इस प्रकार है.

१ घटना की निष्पक्ष जांच सर्वोच्च न्यायालय के माध्यम से स्वतंत्र जांच एजेंसी से करायी जाय.

२. जांच की निष्पक्षता के लिए इस घटना से सम्बन्धित कुलपति हैदराबाद वि. वि. को निष्काषित किया जाय, साथ ही केन्द्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय व स्मृति ईरानी दोनों को तत्काल बर्खास्त किया जाय अन्यथा इनके रहते निष्पक्ष जांच की संभावना क्षीण रह जायेगी.

३. आर. एस. एस. व ए. बी. वी. पी. जैसे साम्प्रदायिक संगठनों को जो देश के प्रजातान्त्रिक मूल्यों पर लागातार प्रहार कर रही हैं जिससे सौहार्द्र लगातार बिगड़ती जा रही हैं, राष्ट्र हित में तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित किया जाय.

भवदीय

अध्यक्ष व समस्त नोएडा निवासी